बिलस्य वाणी न कदापि मे

Skt - VIII

8-4-2020

द्वितीय पाठः

F/C

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

(गुफा/बिल की आवाज मैंने कभी नहीं सुनी)

कस्मिंश्चित् वने खरनखरः नाम सिंहः प्रतिवसति स्म। सः कदाचित् इतस्ततः परिभ्रमन् क्षुधार्तः न किञ्चिदपि आहारं प्राप्तवान्। ततः सूर्यास्तसमये एकां महतीं गुहां दृष्ट्वा सः अचिन्तयत्-''नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीवः आगच्छति। अतः अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि'' इति।

एतस्मिन् अन्तरे गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत्। स च यावत् पश्यति तावत् सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा दृश्यते, न च बहिरागता। शृगालः अचिन्तयत्-''अहो विनष्टोऽस्मि। नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्तीति तर्कयामि। तत् किं करवाणि?'' एवं विचिन्त्य दूरस्थः रवं कर्तुमारब्धः-''भो बिल ! भो बिल ! किं न स्मरसि, यन्मया त्वया सह समयः कृतोऽस्ति यत् यदाहं बाह्यतः प्रत्यागमिष्यामि तदा त्वं माम् आकारयिष्यसि? यदि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि इति।''

किसी जंगल में खरनखर नाम का शेर रहता था। एक बार भूख से व्याकुल होते हुए वह इधर-उधर बहुत घूमा परंतु उसे भोजन प्राप्त नहीं हुआ। इसके बाद शाम को उसने एक विशाल गुफा देखी उसने सोचा- " जरूर रात को इस गुफा में कोई जीव आता होगा। इसलिए मैं यहीं छिपकर बैठता हूँ" ऐसा।

इसी बीच गुफा का स्वामी/मालिक दधिपुच्छ नाम का गीदड़ वहां आ गया। उसने देखा शेर के पैरों के निशान गुफा में जाते हुए है लेकिन बाहर की ओर आते हुए नहीं है। गीदड़ ने सोचा- अरे मैं तो मारा गया। जरूर इस गुफा में शेर है। मैं क्या करूँ? ऐसा सोचकर उसने दूर से बोलना शुरू कर दिया - "हे बिल (गुफा)! हे बिल! क्या तुम्हें याद है? कि जब भी मैं बाहर से आऊँगा तो तुम मुझे बुलाओगी। यदि तुम मुझे नहीं बुलाओगी तो मैं दूसरी गुफा में चला जाऊँगा ऐसा।